बोध-वाक्य

समानो मंत्रः	(अथर्व वेद ६.६४.२)
समितिः समानी	हे बंधुओं! हमारे विचार समान हों । हमारी सभा सबके लिए समान हो । हम सबका संकल्प एक समान हो । हम सबका चित्त एक समान भाव से भरा हो । एक विचार होकर अपने कार्य में एक मन से लगे । इसीलिए हम सबको समान मौलिक शक्ति मिली है ।
समानं व्रतं	
सहचित्तमेषाम् ।	
समानेन वो	
हविषा जुहोमि	
समानं चेतो	
अभिसंविशध्वम् ॥	

केशवसृष्टि समाचार

मासिक

वर्ष १०, अंक ६ मूल्य रु. १०/-

जून २००९ वार्षिक रु. ५०/-

संपादक : महावीर प्रसाद शर्मा

कार्यकारी संपादक : लक्ष्मण गुप्ता, शोभाताई थिटे

संपादक मंडल : विजयालक्ष्मी सामवेदी, सत्यदेव बंका, जगदिश्चंद्र पाटील।

कार्यालय : केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर, जि. ठाणे.

दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए **युनिटी आर्ट ऑफसेट** ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है.

अंतरंग .....

कार्यवाह की कलम से ४

केशवसृष्टि ५

RRVM 8

केशवसृष्टि में आपका सहभाग......... १०

उत्तन वनौषधी संशोधन के बहुपयोगी उत्पाद - **रुदन्ती सिरप** १२

स्वास्थ्य जगत.......................... १३

हँसता हुआ उत्तरार्ध १५

श्रीगुरुजी : दृष्टि और दर्शन १६

वानप्रस्थाश्रम कोई यात्रा नहीं १७

संपादकीय

आदर्श संस्था जीवन हेतु कार्यकर्ता प्रशिक्षण एवं विकास...

सामाजिक संस्था का अर्थ होता है समाज कार्य हेतु जागृत कार्यकर्ताओं का समूह और उनसे उत्पन्न विचार। प्रमुख कार्यकर्ता संस्था की नींव होते है वहीं बाकी कार्यकर्ता संस्था के कार्यके दूत होते है। किसी भी कार्य को प्रशिक्षण देकर योग्य दिशा दी जाए तो संस्था अपने उद्देश्यों की प्राप्ती में सफलता अवश्य प्राप्त करती है।

केशवसृष्टि स्थित रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी यह संस्था अनेक वर्षो से प्रशिक्षण के क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्यरत है। गत अनेक वर्षो से सामाजिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक और विविध राजकीय संगठनों को प्रशिक्षण देने का कार्य रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी द्वारा अविरत चल रहा है।

रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी में उपलब्ध प्रशिक्षण सुविधा का उपयोग करते हुए केशवसृष्टि में संचालित विविध प्रकल्पों के प्रमुख कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण एवं विकास कि योजना बनाई गयी है। केशवसृष्टि और अन्य सभी छः सहयोगी संस्थाओं के कुल १५ प्रमुख कार्यकर्ताओं को इस योजना के अंतर्गत प्रशिक्षित किया जा रहा है। आदर्श संस्था जीवन, व्यक्तित्व विकास, संवाद कौशल्य, कार्य संस्कृति, धर्मादाय आयुक्त तथा सरकारी कामकाज की पूर्तता, कार्यालय व्यवस्थापन Information Technology अकाऊंटस् और ऑडिटिंग, प्रचार एवं जनसंपर्क, Team Building, Motivation आदी प्रमुख विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण में सहभागी प्रशिक्षणार्थीयों को मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। प्रतिमाह उपरोक्त विषयों में से दो विषयों पर मार्गदर्शन किया जाता है। आगामी पांच महिनों में यह प्रशिक्षण संपन्न होगा।

उत्तन कृषि संशोधन संस्था द्वारा संचालित केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय और रामरत्ना विद्यामंदिर में छात्रों की परिक्षाएं संपन्न हो चुकी है। रामरत्ना विद्यामंदिर के कक्षा १०वी और १२वीं के छात्रों का परिक्षाफल भी आ चुका है। अनेक विद्यार्थी अच्छे प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हुए है। परिक्षा में उत्तीर्ण सभी छात्रों का हार्दिक अभिनंदन!

संपादक

कार्यवाह की कलम से...

जागतिक पर्यावरण दिन

५ जून जागतिक पर्यावरण दिन के रूप में विश्व भर में मनाया जाता है। यद्यपि इस प्रकार केवल एक दिन का महत्त्व देनेवाला यह विषय नहीं है। जिस निसर्ग के हम मानव अभिन्न अंग है, उसके प्रति हमारा व्यवहार केवल शोषण का रहा है। अपने ही अस्तित्व को खतरे में डालने का मानव का निसर्ग से हो रहा यह व्यवहार सैकडों वर्षों के बाद अब ध्यान में आ रहा है। उद्योग क्रांति के पूर्व निसर्ग का इतना शोषण नहीं होता था। गांव की अर्थनीति में निसर्ग के साथ समन्वय हुआ करता था। लेकिन औद्योगिक विकास के गत दो सौ वर्षो में चारों ओर से प्रकृति पर हमले हो रहे है। जंगल नष्ट हो रहे हैं, कांक्रीट के जंगल बढ़ रहे हैं और ऊर्जा का उपयोग आवश्यकता से कई गुना बढ़ गया है। इससे प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है और अब हम 'ग्लोबल वॉर्मिंग' के गंभीर संकट के कगार पर खड़े है। आतंकवाद से भी गंभीर ऐसी यह समस्या है जिससे सारा प्राणीजीवन खतरे में है।

केशवसृष्टि में हमें निसर्ग का मनोहर रूप देखने को मिलता है। शहर का वातावरण और केशवसृष्टी का परिसर इसमें जमीन अस्मान का अंतर है। यहां आने पर हमें एक मानसिक शांति और समाधान का अनुभव मिलता है। पूरे वर्षभर पर्यावरण की अनुभूति देनेवाला यह स्थान है। इसीलिए पाठशालाओं के छात्र-छात्राएं, महाविद्यालय के विद्यार्थी, महिलाएं और ज्येष्ठ नागरिक भारी संख्या में यहां पधारते हैं। यहां के नैसर्गिक जीवन का आनंद लेते है। शहरों में रहते रहते हम भूल जाते हैं कि प्रकृति से हमारा कोई रिश्ता है। सुबह से लेकर रात्रि तक जो जीवन हम शहरवासी बिताते हैं, उसमें प्रकृति के साथ कोई भी समन्वय नहीं रहता है। कई बार हम कृत्रिम पद्धति से प्रकृति के विरोध में व्यवहार करते है। केशवसृष्टि जैसे रमणीय स्थान पर जाने से हमें इस भूल का अहसास हो सकता है। इसलिए केवल पर्यावरण दिन को मनाने के लिए दो-चार पेड़ लगाकर हात झटकने का जो चित्र आज दिखाई देता है। उससे अच्छा यह होना चाहिए की हम केशवसृष्टि जैसे प्राकृतिक स्थानों के कार्य को मजबूत करें।

पर्यावरण की रक्षा के लिए गौशाला, कृषि शिक्षा और जैविक कृषि से उत्पादन ऐसे प्रयासों का सफल उदाहरण केशवसृष्टि में देखने को मिलता है। ऐसे स्थान हर तहसील में हो सकते हैं। युवाओं के लिए यह चुनौति है कि वे अग्रेसर होकर पर्यावरण रक्षा के लिए कटिबद्ध हों। तरुणों की शक्ति इस कार्य में लगने से ही इसे गति मिलेगी और कोई आशा की किरणे दिखाई देगी। हम सभी का सौभाग्य है कि हमें केशवसृष्टि जैसे प्राकृतिक प्रकल्प में सेवा कार्य करने का अवसर मिला है। यहां अनुसंधान हो सकता है, पर्यावरण रक्षा के प्रयोग हो सकते है और देशवासियों के लिए मार्गदर्शन देनेवाला यह एक प्रभावी केंद्र बन सकता है। मैं आप सभी पाठकों से अनुरोध करता हूं कि केशवसृष्टि के कार्य से तन मन से जुड़े और कार्यपूर्ति के आनंद में अवगाहन करें।

पर्यावरण के संबंध में हमारे संतों का आदेश भी अत्यंत प्रभावी है। संत तुकाराम ने तो सारे निसर्ग को अपने सगे-संबंधि समझकर लिखा है *'वृक्षवल्ली आम्हां सोयरी वनचरें।'* ऐसे कई सुंदर और अर्थपूर्ण वचन अपने हर संत के साहित्य में हैं। इनसे हमें प्रेरणा मिलती है और बिना थके हम कार्य को आगे ले जागे का प्रयास जारी रख सकते हैं। संघ के ज्येष्ठ अधिकारी भी व्यष्टि, समष्टि, सृष्टि और परमेष्टि के समन्वय की बात हमेशा रखते हैं और अपने प्राचीन ज्ञान का महत्त्व हमारे सामने आता है। आईए! हम सब मिलकर पर्यावरण की रक्षा के लिए निसर्ग देवता की अर्चना करते हैं।

निसर्ग हमें देता है सब कुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें ॥

– ***सतीश सिन्नरकर*** – कार्यवाह, केशवसृष्टि ■

पर्यावरण अध्ययन के लिए अत्यंत रमणीय स्थान ... .

केशव सृष्टि !

मुंबई महानगर से मात्र ४० कि कि.मी दूर भाईन्दर में ...	सागर तटपर नयनरम्य पर्वतशिखाओं की गोद में...

मुंबई एवं महानगरों की भागदौड भरी जिंदगी और बढ़ते प्रदुषण की वजह से आदमी का साँस लेना भी मुश्किल हो गया है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पेड़, पौधे, तालाब, पक्षी, मुक्त विचरण करती गाय देखना महानगर के लोगों के लिए आकर्षण हो चुका है। लेकिन मुंबई महानगर के पास ऐसा कौनसा स्थान है जहाँ यह सब प्रत्यक्ष देखने और अनुभव करने मिले?

जी हाँ एक स्थान है! प्रकृति की सुंदर गोद में फूल, पौधों, प्राकृतिक पानी के झरनों, पक्षियों के कलख के बीच बसा हुआ संस्थान अर्थात, 'केशव सृष्टि!' प्रकृति मनुष्य का अभिन्न मित्र है, उसका कोई दूसरा पर्याय नहीं हो सकता इसका अनुभव केशव सृष्टि में कदम रखते ही आपको होने लगेगा। चारों ओर बिछे हरी घास के गालिचे, रंग-बिरंगे पेड़-पौधे सहज ही आकर्षित करते हैं।

केशव सृष्टि का प्राकृतिक सौंदर्य यह केवल दर्शनीय मात्र न होकर पर्यावरण रक्षा और पर्यावरण अध्ययन करने के लिए अत्यंत उचित स्थान है। पर्यावरण अध्ययन के साथ साथ आपको यहाँ विविध समाजोपयोगी प्रकल्पों का अवलोकन भी होगा। भारतीय कृषि, वनौषधी, उच्च भारतीय संस्कारों के साथ आधुनिक शिक्षा, सामाजिक, राजनैतिक और व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाला प्रशिक्षण केंद्र और स्वस्थ जीवनसंध्या हेतु वानप्रस्थाश्रम आदि आदर्श प्रकल्पों का अवलोकन आप कर सकते है।

मुंबई महानगर एवं आसपास के उपनगरों तथा महाराष्ट्र के विविध शहरों से अनेकों विद्यालय, महाविद्यालय, पर्यावरण रक्षा हेतु कार्य करनेवाली विविध सामाजिक संस्थाएं, ज्येष्ठ नागरिक संघ, महिला मंडल, समाज मंडल, और अन्य प्रतिवर्ष केशव सृष्टि में

समाजोपयोगी प्रकल्पों का अवलोकन करने और प्रत्यक्ष पर्यावरण अध्ययन हेतु पधारते हैं।

वृक्ष हमारा सेवाभावी मित्र एवं उत्तम आदर्श है, उसकी सुरक्षा करना हमारा परम् कर्तव्य है, यह वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता है। केशव सृष्टि में वृक्षों की देखभाल की जाती है, विशेषत: औषधीय गुणोंवाले वृक्षों की। इन वृक्षों की समुचित देखभाल कर अधिक उत्पादन लेने की प्रक्रिया केशव सृष्टि में की जाती है।

केशव सृष्टि के अन्य आकर्षण:

१. प्राकृतिक झरने २. अरब सागर के किनारे पर छोटी छोटी पर्वत शिखाएं ३. विविध फलों एवं फुलों से संपन्न ४. प्रदुषण से कोसों दूर पर मुंबई महानगर के समिप वृक्षवल्ली ५. स्वच्छ एवं मनप्रसन्न करनेवाला स्थान ६. बालोद्यान ७. तरण तालाब ८. आम्रवन ९. नारियल बाग १०. काजू बाग ११. निवासी विद्यालय १२. कृषि विद्यालय १३. वनौषधी संशोधन संस्था १४. २०० भारतीय वंश की गायों की गोशाला १५. वानप्रस्थाश्रम १६. सूर्यास्त दर्शन १७. श्री दत्तसाई मंदिर १८. विद्याप्रद हनुमान मंदिर १९. बालेश्वर शिवध्यान केन्द्र.

दु:खद निधन

भावपूर्ण श्रद्धांजली

कै. नाईक प्रमोद नारायण

मृत्यू दि. ९-५-२००९ वार - शनिवार, हा केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालयात सन २००७-०९ या कालवधीत शिकत होता. याचे शनिवार दि. ९-५-२००९ रोजी अपघाती निधन झाले. नियतीचा हा घाव आमच्या विस्मृतीस जाणे हे तरी अशक्य आहे. काही व्यक्ती निखळ हास्य, खोडकरपणा, बोलकेपणा, मायाळुपणा व कणखरपणा घेऊनच जन्माला येतात. परंतु वीज चमकून जावी तसे क्षणात आपला सर्व जिवंतपणा मागे सोडून दूर निघून जातात. कारण त्या परमेश्वराला सुद्धा त्याशिवाय करमत नाही. अशा या व्यक्तीला आमच्या केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालयातील सर्व शिक्षक, व शिक्षकेतर कर्मचारी, विद्यार्थी, विद्यार्थिनी यांच्यातर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली. मृतात्म्यास शांती लाभो ही ईश्वरचरणी प्रार्थना.

श्रद्धांजली

हमारे आश्रम की निवासी श्रीमती शांताबेन पांचाल का स्वर्गवास दिनांक ९/०५/०९ को आकस्मिक कारण से हुआ. दिनांक १०/०५/०९ को निवासियोंके साथ मिल कर सभी आश्रम के कार्यकर्ताओं ने श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया. इस सभा में सभी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांती प्रदान करें दो मिनिट मौंन रखकर श्रद्धांजली अर्पित की।

तांत्रिक कारणांमुळे मतदान न करणाऱ्यांची संख्या सर्वाधिक

मतदान न करणाऱ्यांचे मनोगत जाणून घेण्यासाठी रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनीने केलेल्या सर्वेक्षणाच्या निष्कर्षांनुसार मौन मतदारांपैकी सुमारे ४५% मतदारांनी यादीत नाव नसल्यामुळे व नाव समाविष्ट करण्याची प्रक्रिया विलक्षण किचकट असल्यामुळे आपण मतदान केले नसल्याचे स्पष्टीकरण दिले आहे. प्रचलित लोकशाही पद्धतीत उमेदवार वा राजकीय पक्षांकडून भ्रमनिरास झाल्याने नैराश्यातून मतदानाकडे पाठ फिरवणाऱ्यांचे प्रमाण १४-१५%च्या आसपास आहे. दि. ७ ते १२ मे, या काळात पुणे, मुंबई व ठाणे येथे घडवून आणलेल्या या सर्वेक्षणाचे निष्कर्ष रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनीचे महासंचालक डॉ. विनय सहस्रबुद्धे व त्यांच्या सहकाऱ्यांनी आज पुण्यात एका पत्रकार परिषदेत जाहीर केले.

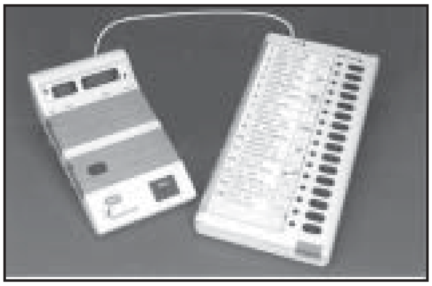

मतदार नोंदणी प्रक्रिया सुलभ करणे, मतदानासाठी इंटरनेटचा पर्याय उपलब्ध करून देण्याबाबतची शक्यता अजमावून पाहणे आणि राजकीय पक्षांची उमेदवार निवड प्रक्रिया अधिक पारदर्शी व लोकतांत्रिक बनविणे इत्यादी महत्त्वाच्या शिफारसी या संदर्भातील अहवालात रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनीने केल्या आहेत.

एप्रिल महिन्यात महाराष्ट्रात झालेल्या १५व्या लोकसभेसाठीच्या मतदानात या वर्षी पुणे शहरात मतदानाचा नीचांक गाठला गेला. मुंबई व ठाण्यातही अपेक्षापेक्षा खूपच कमी मतदान झाले. या पार्श्वभूमीवर मतदान न करण्यामागची मतदारांची कारणे जाणून घेण्यासाठी रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनीने पुण्यात घरोघरी जाऊन सर्वेक्षण केले, तर ठाणे-मुंबई परिसरात अभिरूप मतदान केंद्रे उभारून मौन मतदारांना कारणे सांगणारी मतपत्रिका भरण्याची विनंती करून त्यांचे गाऱ्हाणे नोंदवून घेतले. शिवाय एस.एम.एस. आणि वेबसाईटच्या माध्यमातूनही लोकांची भूमिका समजून घेण्याचा प्रयत्न केला गेला. विविध माध्यमांचा वापर करून एकूण सुमारे पाच हजार मौन मतदारांचे मत प्रबोधिनीने नोंदवून घेतले. अशा मतांचे विश्लेषण मांडणारा अहवाल आज प्रबोधिनीने पुण्यात एका पत्रकार परिषदेत प्रकाशित केला. या प्रसंगी अभ्यास गटाचे सदस्य सर्वश्री रत्नाकर पाटील, यशवंत ठकार, रवींद्र साठे प्रभृती उपस्थित होते.

मतदार नोंदणीसाठी पोस्ट ऑफिसेस व राष्ट्रीयकृत बँकांच्या शांखामधून बारमाही यत्रंणा, राजकीय पक्षांना निवडणूक व्यवस्थापनासाठी प्रशिक्षित कार्यकर्त्यांची यंत्राणा उभी करण्यास सर्व प्रकारचे प्रोत्साहन, याचबरोबर मतदानाचा दिवस सार्वजनिक सुट्टीच्या आसपास येणार नाही हे सुनिश्चित करण्याची निवडणूक आयोगाला सक्ती इत्यादी काही महत्त्वाच्या मुद्द्यांचाही या अहवालाच्या शिफारशींमध्ये समावेश करण्यात आला आहे. डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे यांनी सांगितले की या अहवालाच्या प्रती अधिकृतरित्या केंद्र व राज्य निवडणूक आयोगांना तसेच सर्व प्रमुख राजकीय पक्षांच्या नेत्यांनाही पाठविण्यात येतील. मतदानाच्या घसरत्या प्रमाणाची कारणे शोधण्यासाठी हाती घेण्यात आलेला देशभरातील हा पहिलाच प्रकल्प होता.

With Best Compliments From
Excel Industries Ltd.

Promise Of Excellence
That Excel Has Always Delivered Upon

Unfaltering quality, fully integrated production systems linked to process technology, innovation, expertise & faster market introductions make us the preferred partner for our clients around the world. By providing solutions that are critical for market leadership, we share a vision to be the world's most trusted Chemical Company.

184-87, S.V.Road,
Jogeshwari (W)
Mumbai 400 102, INDIA
Tel: + 91 22 66464200
Fax:+ 91 22 26783508
Email:
excelmumbai@excelind.com
Website : www.excelind.co.in

RAM RATNA VIDYA MANDIR

Keshav Srushti Uttan, Bhayandar

Result of Class XII Science CBSE Board Exam 2009

PINNINTI SURYA TEJA
(Sci. 1st Rank)

BHADANI DAXIS
(Sci. 2nd Rank)

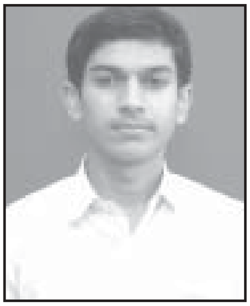

TRIPARTHI KINSHUK
(Sci. 3rd Rank)

Result of Class XII Commerce CBSE Board Exam 2009

JAIN SIDDHARTH
(Com. 1st RAnk)

AGARWAL ADITYA ARUN
(Com. 2nd Rank)

GADIA VIRAL
(Com. 3rd Rank)

Result of Class X Exam 2009

SHAH CHINTAN ANIL
1st Rank

PATEL ARPIT BABUHAI
2nd Rank

DEDHI DHIR DINESH
3rd Rank

RAM RATNA VIDYA MANDIR

Keshav Srushti Uttan, Bhayandar

SUBJECTWISE HIGHEST

English

SHENOY KRISH JITENDRA
93/100

Hindi

KAWAR PARISHEK
95/100

Sanskrit

SHAH CHINTAN ANIL
98/100

Mathematics

DEDHI DHIR DINESH
95/100

Congratulation to All the Students...!

Mathematics

PATEL ARPIT BABUHAI
95/100

Science

PATEL ARPIT BABUHAI
90/100

Social Science

SHAH CHINTAN ANIL
97/100

केशव सृष्टि में आपका सहभाग!

केशव सृष्टि प्रकल्प से आप सुपरिचित है ही। सभी प्रकल्पों का प्रतिदिन प्रगति के साथ विस्तार हो रहा हैं। केशव सृष्टि की इस विकास यात्रा में संस्था द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से समाज का अत्यंत महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहा हैं।

केशव सृष्टि की विभिन्न परियोजनाओं में समाज ने विविध प्रकार से सहयोग किया है। किसी ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर तो किसी ने अपने किसी प्रिय परिवारजन अथवा स्नेहीजन के स्मृति में। किसी ने तो समाज के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व की प्रेरणा से प्रवृत्त होकर सहभाग दिया है।

आप भी हमारी विभिन्न अभिनव योजनाओं में सहभागी होकर सहयोग कर सकते हैं।

विभिन्न योजनाए :

१. उत्तन कृषि संशोधन संस्था द्वारा दापोली कृषि विश्वविद्यालय की मान्यताप्राप्त केशव सृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय का संचालन किया जाता है। भारतीय पारंपारिक कृषि को आधुनिकता की जों देकर सामाजिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में उच्च आदर्श प्रस्थापित करने के लिए तथा किसानों को आत्मनिर्भर बनाने का दृढ संकल्प केशव सृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय ने किया है। केशव सृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय समाज के आर्थिक दुर्बल घटकों के युवक और युवतियों के लिए सुवर्णसंधी प्रदान करता है। इस योजना को सफलतापूर्वक कार्यरत रखने हेतु आपके आशिर्वाद एवं सक्रिय सहभाग की आवश्यकता है। आपके सहभाग हेतु निम्न योजनाएं प्रस्तुत है:

✻ कृषि तंत्र विद्यालय संरक्षक अनुदान रू ५१,०००/-

यह अनुदान आप दो किस्तों में दे सकते है। दानदाता का नाम विद्यालय के अनुदान दाताओं की सूची में सम्मिलित किया जायेगा।

✻ विद्यार्थी प्रायोजित करना : रू११,०००/- (एक वर्ष के लिए अनुदान देकर)

विद्यार्थियोंसे जो शुल्क लिया जाता है, वह उन्हे उत्तम सुविधाए उपलब्ध कराने में पर्याप्त नहीं हैं। यह अनुदान विद्यार्थीयों को अधिकाधिक सुविधाए प्रदान करने में सहाय्यक होगा।

✻ विद्यार्थी सहायता निधी : रू११००/- देकर

जो विद्यार्थी किताबें, नोटबुक, आरोग्य और आवश्यक शैक्षणिक वस्तुएं लेने में सक्षम नहीं हैं ऐसे विद्यार्थीयों को इस योजना का लाभ दिया जायेगा।

२. किशन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम

किशन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम में वानप्रस्थीयों की सेवा की जा रही हैं। न्युनतम दाम में यहां वानप्रस्थीयों की अच्छी से अच्छी सेवा की जाती है। सप्ताह में दो बार नियमित रूप्र से मेडिकल चेक-अप कराया जाता है। शुद्ध सात्विक शाकाहारी भोजन और समय बिताने के लिए टी.व्ही. पुस्तकालय आदी की सुविधा प्रदान की जाती है। निम्न परियोजनाओं में सहभागी होकर आप भी जेष्ठ नागरिकों-वानप्रस्थीयों की सेवा कर सकते है :

✻ स्नेहभोजन योजना : रू ११००/- पूरे वर्षभर में एक दिन का भोजन रू ११०००/- ११ वर्षा तक प्रतिवर्ष एक दिन का भोजन

✻ स्नेहाशिष योजना : वानप्रस्थीयों के लिए अथवा उनकी सुविधा की वस्तु अनुदान देना।

✻ स्नेहाधार योजना : १ वृद्ध का एक मास का खर्च वहन करना।

✻ स्नेहबंध योजना : रू १००/-, २५०/-, ५००/- कुपन अनुदान देकर

✻ स्नेहावास योजना : वानप्रस्थाश्रम में निर्माणाधिन कमरों के लिए प्रति कमरा रू२.५/- लाख अनुदान देकर। दानदाता का नाम अथवा उनके स्नेहीजन का नाम कमरें को दिया जायेगा।

✻ अन्नपूर्णा योजना : महिला मंडलों की सभासदों ने अपने मंडल में प्रतिमाह रू १००/- जमा करना

३. केशव सृष्टि गोशाला :-

केशव सृष्टि गोशाला में भारतीय नस्ल की कुल २०० गायों एवं गोवंश की सेवा की जा रही है। गोसेवा का नि:संदिग्ध ध्येय और सुयोग्य प्रशासन के चलते यह गोशाला आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बन गयी है। गाय, ब्राम्हण, वेद, सत्यनिष्ठ,निर्लोभि और दानशील इन सात तत्वों से पृथ्वी की धारणा होती है अर्थात पृथ्वी का भरण होता है। भारत की इस सनातन शाश्वत परंपरा के निर्वाह में अपना यत्किंचित योगदान देते हुए गो-सेवा परिषद कई वर्षो से केशव सृष्टि, उत्तन भाईदर में गोशाला चला रही है। इन सभी

गायों का लालन-पालन आप सभी गोपलकों एवं गोभक्तों के सहयोग से सुचारूरूप्र से किया जा रहा हैं। भारत की उदात्त गो-संवर्धन और गो संरक्षण परंपरा को पुन: स्थापित करने की आज नितांत आवश्यकता है। इसलिए परिषद आपका आवाह्न करती है कि गो-संरक्षण हेतु गो चारा एवम् गो-ग्रास की हमारी इस योजना में आप सहयोग प्रदान करें। इस योजना के अंतर्गत एक गाय के मासिक चारे का मूल्य रू १९००/- के अंशदान की योजना बनायी गयी है। साथ ही साथ गोदान की योजना भी गोशाला द्वारा संचालित की जाती है।

४. केशव सृष्टि सहल

प्राकृतिक सौंदर्य आनंद, पर्यावरण शिक्षा, वनौषधि परिचय, मंदिरों में दर्शन, परिसर भ्रमण आदि दृष्टी से यहां की सहल प्रसिद्ध है। हमारी सभी संस्थाओं को ऐसे सहल से लाभ होता है। अपना परिवार, ज्ञातिबंधु, स्नेहमिलन आदि प्रकार की सहल आप आयोजित कर सकते हैं।

५. केशव सृष्टि श्री दत्तसाई मंदिर जीर्णोद्धार

केशव सृष्टि में नारियल बाग के समिप स्थित इस प्राचिन मंदिर के जीर्णोद्धार की योजना बनायी जा रही है। केशव सृष्टि के नैसर्गिक सुंदरता के अनुरूप्र इस मंदिर का जीर्णोद्धार करने का प्रयास है। आप यथा शक्ती दान देकर इस पवित्र कार्य में सहभागी बन सकते हैं।

६. केशव सृष्टि समाचार

केशव सृष्टि समाचार यह मासिक पत्रिका केशव सृष्टि में चल रहे सभी प्रकल्पों का मुखपत्र है। इस पत्रिका के सदस्यों को यहां की गतिविधीयों की जानकारी प्रतिमाह मिलती रहती है। आप इसकी सदस्यता बढ़ाने में सहाय्यता करें। साथही साथ आप पत्रिका में विज्ञापन देकर भी सहयोग कर सकते है।

हमारी योजनाओं की वृद्धि एवं विकास हेतु आपके सुझाव सादर आमंत्रित है।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :

१. श्री सतीश सिन्नरकर - ९८२१०३९७२२

२. श्री. बिमल केड़िया - ९८२०१४८९१६

३. श्री. अभय फणसेकर - ९८६९१२९९९२

४. श्री. जगदीश पाटील - ९८३३७१८३३५

५. केशवसृष्टि कार्यालय - ०२२-२८४५०२४७

सहभागीता फॉर्म

दिनांक ....

प्रति
अध्यक्ष
केशव सृष्टि, उत्तन-भाईंदर पश्चिम
जिला ठाणे - ४०११०६

महोदय,

मैं श्री/श्रीमती...
आपकी संस्था की .... परियोजना में सहभागी होना चाहता हूं।
मैं रू. .... का चेक/धनराशी साथ में संलग्न कर रहा हूं।

धन्यवाद।

स्नेहांकीत

उत्तन वनौषधी संशोधन के बहुपयोगी उत्पाद

उत्तन रुदन्ती सिरप

पैकिंग – १०० मिली

मूल्य – रू. २५/-

घटक द्रव्य – रुदंती यह त्रिदोषहर है। रसायन है। कासखासहर तथा शोषहर है।

शतावरी – यह बल्य है। चक्षुष्य, रसायन है। हृघ, पित्तशामक है।

कवचबीज – नाडीदौर्बल्य और वातव्याधि में उपयुक्त है।

पुननवा – यह त्रिदोषहर है। उछ, रक्तवर्धक तथा रसायन है।

यष्टीमधु – वातपित्तशामक है। नाडियों को बल प्रदान करता है। रसायन एवं बल्य है।

उपयुक्तता –

यह शरीर की प्रतिकारशक्ती बढ़ाता है। रसायन है। शोष, वातविकार, कमजोरी इ. में उपयोग होता है।

मात्रा – ५ से १० मिली दिन में २ बार

बच्चों में वैद्यकीय सलाहानुसार प्रयोग करें।

रुदन्ती – Latin Name - Cappanis Monii, हिंदी – रुदन्ती इसकी कंटकयुक्त लता होती है। पुष्प श्वेत और फल गोलाकार होते है। यह पश्चिम भारत में समुद्र तटवर्ती प्रदेशों में पाया जाता है।

रस – कपाय, तिक्त यह त्रिदोषहर है। रसायन है। श्वास, कास, राजयक्ष्मा आदि विकारों में उपयुक्त है।

रसायनं च तज्ज्ञेयं नाराव्याधिनाशनम्।

यथाऽमृता रुदन्ती च जुग्गुलुख हरीतकी॥ (शा.)

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था अब Alovera Juice उपलब्ध है।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें

डॉ. श्रुती वारंग, उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था

दूरभाष – ०२२-२८४५०७२०

केशवसृष्टी वनौषधि केंद्र

अपने केंद्र द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक उत्पादनों का निरंतर प्रयोग करें। जिवनभर उत्तम स्वाथ्य का तथा आनंदमय जीवन का सुखभोग करें। इन उत्पादनों में प्रयोग की हुई अनेक काष्ठ औषधियों का उत्पादन भी अपने प्रकल्प में प्राकृतिक खाद द्वारा किया जाता है।

विविध उत्पादनों की सूची

उत्तन वासाकुमारी सिरप
उत्तन रुदन्ती सिरप
उत्तन प्राश
उत्तन जास्वंद तैल
उत्तन ब्राम्ही-आँवला केश तैल
उत्तन रुमालीन तैल
उत्तन श्रवण तैल
ॲलोव्हेरा जैल
ॲलोव्हेरा क्रीम
त्रिफला चूर्ण
सितोपलादि चूर्ण
तालिसादि चूर्ण
हर्बोमाल्ट-एसव्ही
हर्बो-टी
डाईजिसॉल्ट

अधिक जानकारी के लिए हमे संपर्क करें।

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था

केशवसृष्टी, उत्तन गाँव, गोराई रोड, भाईन्दर पश्चिम,
पिन कोड : ४०११०६ जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ ०७२०

आर्तानाम् दुःखनाशनम्

स्वस्थ रहने के लिए अपनाएं औषधीय सब्जियां

वैद्य दिलीप अग्रवाल
पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार

स्वस्थ रहने के लिए प्रकृति के नजदीक हमें जाना ही होगा। हमारे चारों तरफ अनेक ऐसी वनौषधियां हैं, जिन्हें हम जानते तो हैं लेकिन उनका आहार में इस्तेमाल नहीं करते हैं। आहार को सात्विक और औषधीय रूप में लेना ही प्रकृति के करीब जाना है कुछ ऐसी वनौषधियों का उल्लेख हम यहां पर कर रहे हैं, जो औषधीय रूप में प्रयोग की जाती हैं और भोजन के रूप में भी उनका उपयोग होता है।

सहिजन

सहिजन स्वाद में चरपरा, तीक्ष्ण और स्वभाव से गरम, हल्का, भूख वर्द्धक, रुचिकारक, कड़वा और गुण की दृष्टि सेमल रोधक, शुक्रवर्द्धक, हृदय और आंखों के लिए लाभप्रद, कफ, वात, सूजन, कृमिअग्नि, माद्य एवं विष तथा व्रण को नष्ट करने वाला होता है।

सहिजन के पत्ते शीतल, आंखों के लिए गुणकारी, कामोत्तेजक तथा कृमिनाशक होते हैं । पत्तियों में विटामिन 'ए' और 'सी' प्रर्याप्त मात्रा में होते है। पत्तियों की सब्जी बनाकर खा सकते हैं। सहिजन के फूल भी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होते हैं सहिजन के फूल स्वाद में चटपटे, स्वभाव से गरम तथा गुण में तिल्ली की बढ़त को रोकने वाले, सूजन, स्नायू रोग तथा मांस पेशियों के रोग को दूर करनेवाले होते हैं। सहिजन के ताजा खिले फूल एवं कोमल पत्तियों को तोडकर इन्हें नमक के पानी में अच्छी तरह से धो लें। अब पानी में उबालकर अच्छी तरह से निचोड लें। इसके बाद हींग, जीरा से छौंक दें। आप लहसून,प्याज खातेहै, तो पहले लहसून, प्याज, हींग, मिर्च, हल्दी, धनिया पाऊडर डालकर इस मसाले को भुन लें। इसके बाद निचोड़े हुए फूल पत्तियां डालकर नमक मिला लें तथा ठीक से भुन लें। इसमें ऊपर से पानी न डालें। सहिजन के फूल की सब्जी तैयार है।

कैरी आम के कच्चे फल को कहा जाता है। आयुर्वेद के अनुसार कैरी कसैला, खट्टा, रूचिकारक और अतिसार, मूत्र-रोग एवं योनिरोग में लाभप्रद है।

कैरी की सब्जी – कैरी बहुत कच्ची हो तो छिलके उतारने की जरूरत नहीं है और यदि कैरी कच्ची कम हो तो उसके छिलके उतारकर छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। अब उसे तेल में हीं, जीरा, सौंफ से छौंक दें। इसके बाद नमक मिर्च, हल्दी डालकर उसे प्लेट से ढक दें। भाप से पकने के बाद उसमें स्वाद के अनुसार गुड या चीनी डाल दें। लीजिए, खट्टी-मीठी स्वादिष्ट सब्जी तैयार है। गर्मी के मौसम में यह सब्जी बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होती है।

कैरी का पना – गर्मियों में कैरी का पना गर्मी से राहत दिलाता है। कैरी को गर्म या गैस पर बैंगन की तरह भुन लें। ऐसा करना संभव न हो तो कैरी को पानी में डालकर उबाल लें। अब छिलाका उतार लें तथा सादा पानी में कैरी का गूदा डालकर मथ लें। इसे छान लें तथा उसमें चुटकी भर भुना पाउडर, सूखा पीसा पोदीना तथा नमक और मिर्च स्वादानुसार डाल दें। इसे खट्टा-मीठा बनाने के लिए इसमें मात्रानुसार चीनी भी डाल सकते हैं। यह शीतल पेय के स्थान पर इस्तेमाल किया जा सकता है तथा भोजन के साथ भी इसका सेवन किया जा सकता है।

आंवला

आयुर्वेद के ग्रंथों में आंवले को रसायन कहा गया है। महर्षि चरक के अनुसार दीर्घायु, स्मरण शक्ति, बुद्धि, तंदुरुस्ती, यौवन, शरीर एवं इंद्रिय बल तथा वीर्य की पुष्टता ये सब रसायन के सेवन से प्राप्त होते हैं। ऐसे रसायन में आंवला सर्वोपरि है। विटामिन -'सी' आंवला में भरपूर मात्रा में होता है और किसी भी रूप में नष्ट नहीं होता है। आंवला मुरब्बा और लाँजी दोनों ही रूपों में लाभप्रद है।

आंवले की लाँजी बनानी हो तो आंवले लेकर पानी में उबाल लें। जब आंवला उबल कर फट जाए तो इसे चलनी में रख दें ताकि पानी निथर जाए। अब आंवले की कलियां अलग कर गुठली फेंक दें। कड़ाही में तेल गर्म कर हींग, जीरा, सौंफ तथा अजवाइन के साथ छौंक दें। स्वादानुसार नमक, मिर्च, हल्दी और चीनी डाल दें। लीजिए, खट्टी-मीटी स्वादिष्ट गुणकारी लाँजी तैयार है।

लेहसुला

लेहसुला को लोग लिसोडा भी कहते हैं। लिसोडा छोटे और बडे दोनों ही तरह का होता है। लिसोडा का कच्चा फल ठंडा, मधुर, कडवा, हल्का कसैला, वात वर्द्धक, पित्तशामक, रुचिकारक और रक्त विकार, नेत्र विकार तथा कफ दोष को नष्ट करने वाला होता है । लिसोडा के कच्चे फलों की सब्जी बहुत ही स्वादिष्ट, रुचिकारक और लाभकारी होती है -

लिसोड़े को पानी में धो लें। उन्हें पानी में उबाल लें। पकने के बाद उन्हें पानी से बाहर निकाल कर उनके डंठल और छतरीनुमा लगी टोपी एवं अंदर की गुठली निकाल दें। अब एक कच्ची कैरी लेकर छिलका हटा लें तथा बारीक काट लें। इस कैरी को हींग, जीरा के साथ कड़ाही में छौंक दें। इसके बाद उसमें लिसोड़े को डालकर उसे भुन लें। अब थोड़ी चीनी डाल दें। ऊपर से पानी न डालें। लिसोड़े की सब्जी तैयारी है।

ग्वार पाठा

ग्वार पाठे का दूसरा प्रचलित नाम घृतकुमारी है। इसे अंग्रेजी में एलोवेरा भी कहा जाता है। इसमें ढेरों औषधीय गुण हैं। इसका प्रयोग करने से मलशुद्धि होती हैं, भूख बढ़ती है तथा सप्तधातुओं का पोषण होकर उनकी शुद्धि होती है। खांसी, क्षय, उदर रोग, वात व्याधि, मंदाग्नि, कब्ज, तिल्ली तथा यकृत रोग, अम्लपित्त और कृमि रोग इसके सेवन से नष्ट होते हैं।

ग्वार पाठा दो तरह का होता है - एक मीठा और दूसरा कड़वा। मीठे ग्वारपाठे की पत्तियां पतली और कम गूदे वाली होती हैं तथा स्वाद में कड़वी होती है। कड़वे ग्वारपाठे की पत्तियों मोटी, अधिक गूदेवाली तथा स्वाद में कड़वी होती हैं।

इन दोनों ही की सब्जियां बनती है। कड़वे ग्वारपाठे की पत्तियों के किनारे के कांटे हटा दें। चार-चार अंगुल के टुकड़े कर इन्हें पानी में धोले और इनका गूदा निकाल लें। गूदे को नमक के पानी में २० मिनट तक रहने दें उसके बाद पानी से निकाल लें। गूदा बड़ा है तो उसके टुकड़े करके हींग, जीरा एवं सौंफ के साथ छौंक लगा दें। ऊपर से हलदी, नमक एवं अमचूर डाल दें। अब ठीक उसे भुन लें। स्वाद में करेले की सब्जी की तरह कड़वाहट होती है लेकिन यह सब्जी बहुत ही लाभप्रद होती है।

मीठे ग्वार पाठे की पत्ती के दोनों किनारों के कांटे हटा दें। अब इन्हें पानी में धो डालें। फिर छोटे छोटे टुकड़े कर लें। इसके बाद हींग, जीरा एवं सौंफ के साथ छौंक दें। ऊपर से हल्दी, नमक मिर्च एवं अमचूर डालकर इसे भून ले। अमचूर नहीं पसंद हो तो नींबू का रस डाल सकते हैं। पानी न डालें। लीजिए सब्जी तैयार है। इसके टुकड़े आलू की तरह गलते नहीं हैं, इसलिए भोजन करते समय कचर-कचर की आवाज कीअनुभूति होती है। लीजिए ग्वार पाठे की सब्जी तैयार है। इसे भोजन के साथ परोसें।

चौलाई

आयुर्वेद के अनुसार चौलाई एक स्वादिष्ट कब्जी ही नहीं बल्कि गुणकारी औषधि भी है। चौलाई की सब्जी प्रतिदिन खाने से अनेक रोग-विकार नष्ट होते हैं। शरीर में विषों के निवारण के लिए चौलाई अधिक गुणकारी है। चौलाई के पत्तों की सब्जी शीतल, कब्ज को नष्ट करनेवाली, रक्त विकारों को मिटानेवाली और पौष्टिक होती है। चौलाई की सब्जी पाचन शक्ति को बढ़ानेवाली और अग्निदीपक भी है।

दही मिलाकर चौलाई की सब्जी को अधिक स्वादिष्ट बनाया जा सकता है। इसके क्षार तत्व और रेशे आंतों में बहुत दिनों से एकत्रा, कठोर हुए मल को कोमल करके निकाल देते हैं। स्तन पान करानेवाली स्त्रियों के चौलाई की सब्जी सेवन करने और प्रतिदिन चौलाई का रस पीने से स्तनों में दूध की वृद्धि होती है। चौलाई में लौह तत्व काफी मात्रा में होता हैं। चौलाई से विशेष गुणकारी क्षार ३-६ प्रतिशत मात्रा में होता है।

चौलाई की सब्जी बनाने के लिए पहले उसे धोकर पानी निथार लें, फिर बारीक काटकर उबाल लें। अब हींग, जीरा, लहसून, हरी मिर्च डालकर तड़काएं। फिर उबली हुई चौलाई निचौड़ कर छौंक में डाल दें। नमक स्वादानुसार डालकर अच्छी तरह से मिला ले। लीजिए सब्जी तैयार है।

('योग संदेश' से साभार)

प्रेरक - प्रसंग

मोक्ष नहीं चाहिये

प्रसंग १९४६ सन् का है। महानता पं. मदन मोहन मालवीयजी दिल्ली से लौटकर प्रयाग रूके। स्वागतकर्त्ताओं की भीड़ स्टेशन पर जुटी। वे हिंदुत्व की प्रतिमूर्ति थे, सरल, सादा जीवन, सेवा के लिये सदैव उद्यत, उनका भारतीय संतो सा व्यक्तित्व सब के लिये सुलभ था। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सेवाओं को कौन भूल सकता है? देश विभाजन की चर्चा सुनकर उन्हें मर्मांतक पीड़ा होती। नोवाखाली में हिंदुओं पर भीषण अत्याचारों के समाचारों से उनके मानसिक कष्ट का पारावार न था। उसी पीड़ा से वे अस्वस्थ रहने लगे थे। प्रयाग में उनके विश्राम की व्यवस्था की गयी।

चिकित्सा एवं सुश्रूता प्रारंभ हुई। परंतु मालवीयजी के चेहरे की प्रसन्नता न लौटी। एक दिन उन्होंने अपने एक सहयोगी को बुलाकर कहा। 'तुम एक बात याद रखना,' यदि मुझे अस्वस्थता में होश न रहे और लोग मुझे अंतिम समय में काशी ले जाना चाहें तो मना कर देना। 'मेरी यह इच्छा बता देना।' 'ऐसा आप क्यों कर रहें हैं महामना!' रूंधे स्वर में सहयोगी ने पूछा। 'काशी क्षेत्र में मरने से मोक्ष मिल जाता है, पर मुझे मोक्ष नहीं चाहिये।' 'मुझे तो फिर से यहां जन्म लेकर जन-सेवा के अनेक कार्य जो अभी अधूरे हैं- पूर्ण करने हैं।' 'मालवीयजी की ज्वलंत भावना- 'माँ की सेवा यदि अधूरी है तो मोक्ष नही चाहिये।' फिर देह धारण कर जन-सेवा करूँ- सुनकर सहयोगियों के नेत्रों से टपटप अश्रु प्रवाहित होने लगे।

हँसता हुआ उत्तरार्ध

आज से कुछ वर्ष पहले तक भारत में वानप्रस्थाश्रम की कल्पना भी नहीं थी। जब विदेश से घूमकर आये लोग मुझे वहां के वानप्रस्थाश्रम के बारे में बताते थे तो मुझे अपनी भारतीय संस्कृती पर गर्व होता था, जिसमें तीन तीन पीढ्यिां साथ रहती है। (मां बेटा-पोता)

आज से कुछ समय पहले तक बच्चों को मां बाप का साया व सहारा अच्छा लगता था और उनकी सेवा करने में उन्हें अपने कर्तव्य का बोध होता था व आत्मिक सुख मिलता था। मां बाप को भी अपने बच्चे के साथ आत्मिक सुख व सुरक्षा महसूस होती थी। विदेशी प्रभाव में आकर हमारे भी घरों के आंगन छोटे होने लगे तो दिल का आंगन भी तंग होने लगा और परिवार बिखरने लगे। बच्चों गांव से शहर और शहर से विदेश में बसने लगे और पीछे छूटने लगे बूढे मां-बाप। जो बच्चों के भेजे पैसों के सहारे रहने को मजबूर थे तो कुछ जिनकों पैसे की जरूरत नहीं थी अकेले रहने को मजबूर थे। यानी कि हर हाल में उन्हें अपनी पुरानी यादों के साथ अकेले जीना है। अपनत्व के बिना एकाकीपन ने जीवन को उत्साहहीन बना दिया और ऐसे में भारत में भी वानप्रस्थाश्रम की शुरूआत हो गई।

आईए हम सब विशालता में आये और अपने इस वानप्रस्थाश्रम को ही अपना परिवार समझे और गाए -

आई है वृद्धावस्था सुहावनी, आओ इसका स्वागत करले।
नई सुबह मुस्कराती आई, हम भी थोड़ा मुस्करा ले।

हर हाल में मुस्कराईए क्योंकि laughter is the best medicine क्योंकि हंसी सबको अच्छी लगती है। अगर रोनी सूरत बनाए कोई आपके सामने बैठा हो तो देखने में तो बुरा लगता ही है, समय भी काटे नहीं कटता। वहीं कोई हंसी बिखरेता हुआ बैठ जाय तो समय कैसे निकल जायेगा पता भी नहीं चलेगा।

हंसी हमारे लिए कुदरत का मुफ्त इलाज है। इससे हमारी बहुत सी बीमारियां उडन छू हो जाती हैं और हमें पता भी नहीं चलता। हम अपनी मुस्कराहट हर किसी को उपहार में दे सकते हैं। इसके लिए हमें कुछ खरचना नहीं, है बल्कि हमारा उपहार दुगुना होकर हमारे पास लौटता है।

तो आईए, आज हम सब मिलकर प्रण करते हैं कि हम अपने जीवन के इन पलों को ही याद करेंगे जिनमें खुशियां ही खुशियां थी और हम हंसते-हसांते हुए अपने जीवन के उत्तरार्ध को हंसी की जन मन भावनी सुगंध से भर दे। - **अमिता अग्रवाल**

वसंत स्मृती संचालित

किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम

केशवसृष्टी वानप्रस्थाश्रम में पधारे, माता-

पिता के समान वृद्धो की सेवा करे, वानप्रस्थाश्रम के निवासियों के साथ समय बिताकर मानसिक शांती एवं अलौकिक आनंद प्राप्त करे यह शास्त्र समंत मान्यता है, की दुसरों की सेवा से बडा कोई पुण्य नहीं है।

निम्नलिखित प्रकार के दान करके आप वानप्रस्थाश्रम के आधारस्तंभ बन सकते हैं।

१) स्नेह भोजन	११०० रू.(१दिन, १समय), ११००० रू.(११वर्ष, १समय)
२) मधुबन योजना	१ पेड रू. ५००
३) स्नेहबंध	कुपन रू. १००/ रू. २५०/-, रू.५००
४)स्नेहाधार	एक ज्येष्ठ नागरिक का मासिक खर्च।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे
वानप्रस्थाश्रम में सदैव, आपके कृपाभिलाषी

प्रमुख कार्यालय
राजपुरिया भवन, ६९ नेहरू रोड, विलेपार्ले (पू.),
मुंबई - ५७. दुरभाष : २६११५४१८/२६१५०७२६

वानप्रस्थाश्रम
केशवसृष्टी रामरत्ना विद्यामंदीर के पास, उत्तन गोराई रोड
भाईंदर (प) पिनकोड- ४०११०६ दूरभाष : २८४५०१५८

श्री गुरुजी : दृष्टि और दर्शन

अनिवार्य राष्ट्रभाव

राष्ट्र भाव श्रेष्ठ

राष्ट्रभाव श्रेष्ठ और अनिवार्य है। इसको छोडा नहीं जा सकता। इसे जो छोडेगा, उसका सर्वनाश हो जाएगा। पृथ्वी पर अलग-अलग समय पर भिन्न-भिन्न विचार-प्रवाह उत्पन्न हुए हैं। उनमें से एक यह भी है कि राष्ट्र वगैरह मानव-मानव के बीच भेद उत्पन्न करनेवाली कल्पनाएँ हैं, इसलिए इसे छोड देना चाहिए व समग्र पृथ्वी के मानव एक ही परिवार के हैं, यह मानना चाहिए।

प्रयोग व अनुभव

१) ईसाइयत

प्राचीन काल में ईसाई मत चला। उनकी मान्यता थी कि देशों की सीमाओं को तोड़कर ईसाई मत का साम्राज्य संपूर्ण जगत् पर हो जाएगा, तब सारे लोग ईसाई होने के कारण मिलकर रहेंगे। मानो उनका एक राष्ट्र बन जाएगा। इस प्रकार की धार्मिक कल्पना को लेकर उन लोगों ने प्रयत्न किया। लेकिन परिणाम क्या हुआ? जो लोग ईसाई बन गए थे, उन्होंने क्या अपने राष्ट्रजीवन को छोड़ दिया? ऐसा नहीं हुआ। इतना ही नहीं तो भिन्न-भिन्न देशों के लोग ईसाई बनने के बाद भी अपने राष्ट्रीय अभिमान को लेकर आपस में लडे। इंग्लैंड, अमरीका, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्पेन – सभी ईसाई हैं। इन ईसाई होने वाले देशों ने आपस में इतना खून-खराबा, इतना नरसंहार किया जितना पृथ्वी पर अभी तक अन्य किसी ने नहीं किया होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक परिवार बनाने निकला ईसाई मत अपने अनुयाइयों को राष्ट्रभाव छोड देने की प्रेरणा नहीं दे सका। इतना ही नहीं तो इन लोगों ने राष्ट्रभाव के लिए ईसाई मत को ही तोड-मरोड कर अपने राष्ट्रजीवन में लाकर बिठा लिया।

२) इस्लामियत

इसके बाद इस्लाम का विचार आया। इस्लाम के बारे में कहा जाता है कि 'इस्लाम कोई सीमाएँ नहीं मानता, इस्लाम राष्ट्रवाद को मान्यता नहीं देता।' इसके बाद भी हम देखते हैं कि अरब कहलानेवाले ही आपसी ईर्ष्या, स्पर्धा व द्वेष रखते हैं। आपस में लडते हैं। हिंदुस्थान में समय-समय पर भिन्न-भिन्न जाति के मुसलमान आए, परंतु उन्होंने एक-दूसरे के विनाश का ही काम किया। इस्लाम भी राष्ट्रभावना नष्ट कर जागतिकता लाने में असफल रहा है।

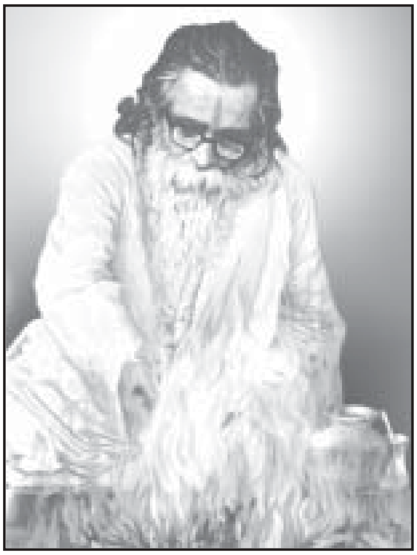

३) साम्यवाद

आजकल का नवीन विचार है कि धर्म व ईश्वर को छोड़कर केवल आर्थिक जीवन को महत्त्व देना चाहिए। इसको समाजवाद और साम्यवाद के नाम से जाना जाता है। इस विचार के लोगों ने भी घोषणा की थी कि कम से कम संसार-भर के श्रमिकों को एकत्र कर, बंधुभाव निर्माण कर ही लेंगे। लेकिन देखने में यह आया है कि रूस, चीन, पोलैंड, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया अलग-अलग राष्ट्र बने हुए हैं और आपस में संघर्षरत रहकर ईर्ष्या-द्वेष रखते हैं। राष्ट्रभावना इस जागतिक विचार को गाड़कर उस पर ही खडी है।

४) हिन्दुत्व

हमारे यहाँ तो पहले से ही इसका विचार हुआ है। हम लोगों में पूर्वकाल से यह धारणा रही है कि राष्ट्र नष्ट करने की आवश्यकता नहीं। सारे राष्ट्र अपनी विशेषताएँ कायम रखते हुए परस्पर एक-दूसरे के पूरक बनते हुए विविधता में समरस होकर मानवता का पोषण और संवर्धन कर सकते हैं। हमारे यहाँ केवल मानवता ही नहीं, पशु-पक्षियों का भी विचार किया गया है।

इस जगत् के अंतिम सत्य 'मानवता का कल्याण' को आत्मसात् करने के लिए सब राष्ट्रों में समन्वय रहना चाहिए। राष्ट्रभावना को समाप्त करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि यह अमर है। इसलिए राष्ट्रभावना निरंतर प्रेरणा देने वाली है।

साभार – श्री गुरुजी दृष्टी और दर्शन

वानप्रस्थाश्रम कोई यात्रा नहीं

मैं कोई लेखिका नहीं हूं। मुझे शब्दों से खेलना नहीं आता, हाँ, मै एक दर्शक हूँ जिसने जीवन के रंगमंच के अनेक पात्रों को देखा और सुना है। आज जब मैंने कुछ लिखने की चेष्टा की है, तो ज्ञात होता है कि मन की भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करता कितना कठिन है। कितने विचार है जिन्हें अभिव्यक्त करना जटिल है।

मैंने प्राय: सुना है कि जीवन एक यात्रा है, एक खोज है, एक अभियान है, जिसे हर व्यक्ती अपनी ही तरह से मूल्यांकन करता है। इन सब वाक्यों को मैंने शब्दों का जाल ही समझा, लेकिन आज जब मै स्वयं एक तटस्थ भूमिका में अपने चारों ओर चल रहे कोलाहल को देखती हूं, तो लगता है कि 'जीवन के तीन पडाव''वाली व्याख्या में सत्य है। ब्रह्मचर्य में व्यक्ती नेत्रों में स्वप्न, हृदय में अभिलाषा और कार्य में स्पर्धा लेकर निकलता है। इन को साकार करने की इच्छा और क्षमता दोनों का सृजन करता है। गृहस्थाश्रम में परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर एक कर्म संग्राम में व्यस्त हो जाता है। तन्मयता से कर्म करता है और अपने जीवन स्तर की उन्नती और बच्चों की महत्त्वाकांक्षाओं को अपने ऊपर हावी पाता है। परंतु वानप्रस्थाश्रम एक ऐसा पडाव है जहां हम अपने कर्मो का लेखा-जोखा सामने रख अपनी उपलब्धियों को तोलते हैं। चिंतन मनन का अवसर पाते है। जीवन के इसी व्यवस्था में मैंने आठ-दस संस्थों को करीब से देखा। यह वास्तव है कि मैं स्वयं यहां बहुत अधिक नहीं आ पायी पर यह भी सत्य है कि एक विचारशील व्यक्ती होने के कारण मैं यहां के लोग और उनकी मन:स्थिति से अनछुई नहीं रह सकी। इस संस्था के अतिरिक्त भी जीवन क्षेत्र के अंदर रहकर भी मैंने कई व्यक्तियों को वानप्रस्थाश्रम के स्थिति में देखा है। उनके अनुभव और सोच का सार ही इस लेख और लेखिका की चेष्टा है।

असल में वानप्रस्थाश्रम कोई यात्रा नहीं जिसमें हमें सीमोल्लंघन करना पडे। यह एक मानसिक अवस्था है जिसमें हम रुक कर, स्थान मन से अपने कार्यो और उपलब्धियों के बारे में विचार करते है। इस पडाव में समय अधिक होता है उत्तरदाईत्व कम होता है। यहां हम अपने त्रुटियों को समझकर उसका विश्लेषण कर सकते हैं। तन और मन दुर्बल होता है पर इच्छायें जीवित रहती है। अपने जीवन के अनुभवों की प्रष्टभूमी में हम युवा पीढ़ी को सही राह दिखा सकते है। अपने आप को एक उदाहरण मात्र मानकर हम आनेवाले पीढ़ी को सीख दे सकते है। यहां व्यक्ती के पास धन अधिक नहीं होता परंतु अनुभवों का वह बडा धनी होता है। सुनाने के लिए कई विचार और आदर्श (उपदेश) होते हैं; केवल सुनने वालों की कमी रहती है। जीवन के चहल पहल में व्यस्त युवा पीढ़ी कभी रुककर इनसे वार्ता कर ले तो कई अधूरे काम सही तरह से कर सकती है।

पुराणों में वानप्रस्थाश्रम को वन में व्यतीत करने की प्रथा बताई गई है। यहां हम प्रकृती के निकट होते है। जिस प्रकृती से हमने जीवन भर लिया है, उस ऋण को लौटाने का कार्य कर सकते है। पेड़ लगाना, पक्षियों के लिए उद्यान का सृजन करने का कार्य कर सकते। अच्छे काव्यों को पढकर विचारधारा को सही दिशा देने इस आश्रम का उद्देश्य हो सकते है। आधुनिक युग में हमें मन की ओर प्रस्थान करने की आवश्यकता नहीं है। हम अपने परिवार मैं रहकर भी इस आश्रय के उद्देश्यों को समझकर व्यवहार कर सकते है। परिवार के सदस्यों की सहायता करना, यथाशक्ती आर्थिक योगदान देना, अच्छी शिक्षा देना और स्वयं भी स्वाभिमान के साथ जीवन व्यतीत करना ही इस युग का वानप्रस्थाश्रम है। इस अवस्था को पूर्ण रूप से समझने के लिए मन को दृढ और निश्चल रखना आवश्यक है। अच्छे लेख और ग्रंथ इस में हमारी सहायता करती है। यह 'आश्रम' एक मन:स्थिती है, कोई विशेष संस्था नहीं, एक विश्राम है, वृद्धावस्था नहीं, एक बहाव है कोई पडाव नहीं, इस आश्रम की तैय्यारी एक योजना हो सकती है। शारीरिक व्यायाम, आर्थिक संचय, मानसिक दृढता और वैचारिक शुद्धता हमें इस आश्रम में सहायता करेगा। कई लेखकों ने इस आश्रम को मनुष्य का सुनहरा काल कहा है जिस तरह संध्या काल में हर श्रमिक भाग दौड के बाद विश्राम करता है और आनेवाले दिनचर्या के लिए योजना बनाता है, उसी प्रकार वानप्रस्थाश्रम में व्यक्ती कोलाहल से मुक्त हो किसी नई दिशा की ओर ध्यान देता है। यह निश्चित है कि कई व्यक्ति इस अवस्था में अपने आप को अनावश्यक या तिरास्कृत पाते है। परिवार के कार्यो में योगदान नहीं दे पाते। परंतु वे उन क्षणों में आनंद प्राप्त कर सकते है। तटस्थ होकर जीवन के रंगमंच में इन पात्रों को अपने उलझनों को सुलझाते हुए देख सकते है। अपने सिखायें हुए आदर्शो के वेदी पर कितना खरा उतर रहे हैं यह अवश्य देख सकते है।

इस आश्रम को हर व्यक्ती अपनी तरह से जीता है। एक शांती मन के भीतर और आसपास बना लेना हमारे ही हाथ में है। जिस तरह रेलगाडी अपनी गती धीमी कर स्थानक पर जा रुकती है, या कोई झरना उंचाई से गिरकर शांत धारा बन बहता है, उसी तरह व्यक्ती इस आश्रम का पूर्ण आनंद का उपभोग करेगा। इसे सुनहरा काल समझकर तन और मन को तैयार करे। आशा और निराशा से परे, एक निर्मल, निर्मोही क्लेशहीन जीवन ही 'वानप्रस्थाश्रम' है। मन से वास्तव में अपने परिजनों को ऋणमुक्त कर देना ही वानप्रस्थाश्रम है। अपने सहयोगियों के त्रुटियों को क्षमा करना और हमसे हुए अपराधों की क्षमा याचना ही 'वानप्रस्थाश्रम' है। एक वादहीन, निर्मल, प्रसन्न जीवन निर्वाह ही वानप्रस्थाश्रम है।

– श्रीमती भानू कृष्णा

Book your space today

KESHAV SRUSHTI SAMACHAR

Special Advertisement Package. (Annual)

ADVERTISEMENT RATES (For General issuesonly)

		Monthly		Yearly	
	Size	B/W	Colour	B/W	Colour
Full Page	22 x 15 cm.	5000/-	10000/-	45,000/-	96,000/-
Half Page	11 x 15 cm.	3000/-	5000/-	28,800/-	45,000/-
Inside Cover	22 x 15 cm.	--------	10,000/-	---------	96,000/-
Back Cover	18 x 15 cm.	--------	15,000/-	---------	1,44,000/-
Page Sponsor	03 x 15 cm.	2000/-	-----------	24,000/-	

KESHAV SRUSHTI SAMACHAR
Advertisement ORDER FORM

Date :

To,
Keshav Srushti Samachar,
Keshav Srushti, Uttan,
Bhayandar (W) Dist: Thane - 401 106
Tele: 022-28450247/28452855

Dear Sir,
We hereby confirm the booking for Advertisement space in your above magazine for the

issue ________ OR from ________ to ________

Size ________ Type ________ Rate ________

Material : ________

Payment Terms : ________

Thanking you,
Yours faithfully,

seal & signature of authority

Company's Name, Address

Order Executed By : ________

Remark : ________